

# डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, चर्च और अंतिम बातें, सत्र 19, अंतिम निर्णय, उद्देश्य, परिस्थितियाँ, शाश्वत स्थिति, शाश्वत दंड

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन द्वारा चर्च के सिद्धांतों और अंतिम बातों पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 19 है, अंतिम निर्णय, उद्देश्य, परिस्थितियाँ, शाश्वत स्थिति, शाश्वत दंड।

हम अंतिम बातों, विशेष रूप से अंतिम निर्णय के बारे में अपना अध्ययन जारी रखते हैं।

यह निर्धारित करने के बाद कि समय युग के अंत में था, मसीह की वापसी के बाद, पुनरुत्थान के बाद, और नए स्वर्ग और नई पृथ्वी से पहले, हमने अंतिम न्याय के उद्देश्यों पर चर्चा शुरू की। प्राथमिक उद्देश्य मनुष्यों के साथ व्यवहार करना नहीं है, बल्कि परमेश्वर के साथ व्यवहार करना है। प्राथमिक उद्देश्य अंतिम न्याय को प्रदर्शित करना है।

अंतिम न्याय का प्राथमिक उद्देश्य परमेश्वर की संप्रभुता, धार्मिकता, शक्ति, सत्य, पवित्रता और महिमा को प्रदर्शित करना है। दूसरा उद्देश्य, मुझे इसे नकारात्मक और सकारात्मक दोनों तरह से कहना होगा, यह निर्धारित करना नहीं है कि कौन बचाया जाएगा और कौन खो जाएगा। यह मृत्यु से पहले निर्धारित किया जाता है।

यूहन्ना 3:16 से 18, क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना अद्वितीय पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए। क्योंकि परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिये नहीं भेजा कि जगत पर दण्ड की आज्ञा दे, परन्तु इसलिये कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए। यूहन्ना 3:17 से 18, जो कोई उस पर विश्वास करता है, वह अब दोषी नहीं ठहराया गया।

जो कोई भी उस पर विश्वास नहीं करता है, वह पहले से ही दोषी है क्योंकि उसने परमेश्वर के एकमात्र पुत्र के नाम पर विश्वास नहीं किया है। प्राथमिक उद्देश्य परमेश्वर की महिमा से संबंधित है। दूसरा उद्देश्य अनंत नियति निर्धारित करना नहीं है, बल्कि अनंत नियति निर्धारित करना है।

हमने यूहन्ना 5:27 से 29 में इसे कई बार देखा है। वह समय आ रहा है जब कब्रों में पड़े सभी लोग उसकी आवाज़ सुनेंगे और बाहर आएंगे। पुनरुत्थान होगा।

जिन्होंने अच्छा किया है उन्हें जीवन का पुनरुत्थान मिलेगा, जिन्होंने बुरा किया है उन्हें न्याय का पुनरुत्थान मिलेगा, या मत्ती 25 में वापस जाएं, भेड़ और बकरियों, उनके दाहिने हाथ पर जो लौटते हुए चरवाहे राजा हैं, उनसे यीशु कहेंगे, आओ, तुम जो मेरे पिता के द्वारा धन्य हो। दुनिया के निर्माण से पहले तुम्हारे लिए तैयार किए गए राज्य को ग्रहण करो। उनके बाएं हाथ के लोगों से, वह कहेंगे, हे शापित लोगों, मेरे पास से चले जाओ, शैतान और उसके दूतों के लिए तैयार की गई अनन्त आग में जाओ।

अंतिम निर्णय का प्राथमिक उद्देश्य परमेश्वर की महिमा है। दूसरा उद्देश्य अनंत नियति निर्धारित करना नहीं है, बल्कि उन्हें निर्दिष्ट करना है। और फिर तीसरा, अंतिम निर्णय का तृतीयक उद्देश्य दण्ड की डिग्री निर्धारित करना है, इंजीलवादी सहमत हैं, और पुरस्कार। कुछ असहमति है।

मैं कुछ अंशों की ओर मुड़ने जा रहा हूँ। मैं कुछ अंशों की ओर मुड़ने जा रहा हूँ। सबसे पहले, सज़ा की डिग्री समझ में आती है।

क्योंकि यद्यपि नरक की सज़ा हमेशा के लिए है, लेकिन इसकी अवधि एक जैसी है; यह व्यक्ति की जीवनशैली के पाप के अनुसार न्याय की तीव्रता में भिन्न होती है। और यह समझ में आता है। कुछ लोगों ने सोचा है कि पुरस्कार अनुग्रह में बाधा डालते हैं और अनुग्रह को बदनाम करते हैं।

और इसलिए मेरा एक मित्र जो मेरा एक शिक्षित मित्र है, वह सबसे अच्छा यही कह सकता है कि, हाँ, निश्चित रूप से पुरस्कार हैं। लेकिन हमें मुकुट दिए जाते हैं, और फिर हम उन्हें राजा को वापस कर देते हैं। खैर, यह सब भगवान की महिमा के लिए है।

लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि न केवल सजा के स्तर हैं, बल्कि पुरस्कार के स्तर भी हैं। लूका 19:16, और 17. मैं बहुत जल्दी आगे बढ़ने जा रहा हूँ और बस कुछ बातों को बताने की कोशिश करूँगा।

लूका अध्याय 19:16, 17, और 19, 10 मित्रों का दृष्टांत। हे प्रभु, आपके मित्रों ने 10 मित्रों और कमाए हैं। अच्छा किया, अच्छे और वफादार सेवक, अच्छे सेवक।

लूका 19:17, क्योंकि तू बहुत थोड़े में विश्वासयोग्य रहा है, तुझे दस नगरों पर अधिकार मिलेगा। उसका प्रतिफल बड़ा है। दूसरा कहता है, हे प्रभु, तेरी मुहर ने 5 मुहरें बनायी हैं।

और गुरु ने कहा कि तुम्हें 5 शहरों से ऊपर जाना है। मुझे ऐसा लगता है कि उपहारों और जिम्मेदारियों की एक डिग्री अलग-अलग पुरस्कारों के अनुरूप है। सुनो, राज्य का हिस्सा बनना अब तक का सबसे बड़ा पुरस्कार है।

यह उस पर एक तरह से ऊपर है। क्या यह नई पृथ्वी में जिम्मेदारियों के संदर्भ में शाब्दिक है? मुझे नहीं पता, शायद ऐसा हो। प्रभु, यह आपकी मित्रा है।

मैंने इसे रूमाल में रख लिया। मुझे डर था क्योंकि तुम बहुत सख्त आदमी हो। वह भगवान, मालिक की आलोचना कर रहा है।

तूने जो जमा नहीं किया, उसे ले लेता है और जो बोया नहीं, उसे काटता है। हे दुष्ट दास, मैं तेरे ही शब्दों से तुझे दोषी ठहराऊँगा। और वह उसे मेरे सामने वध करने के लिए भेज देता है।

यह अच्छा नहीं लगता। ऐसा लगता है कि उसे दोषी ठहराया गया है, उसे न्याय दिया गया है। वास्तव में, उसका इनाम छीन लिया गया है और उस व्यक्ति को दे दिया गया है जिसके पास 10 थे।

तो, मुझे ऐसा लगता है कि इसमें दंड की डिग्री के बारे में नहीं कहा गया है, बल्कि यह पुरस्कार की डिग्री के बारे में है। रोमियों 2.5, तुम अपने लिए क्रोध जमा कर रहे हो, पॉल कपटियों से कहता है। तुम क्रोध जमा कर रहे हो।

ऐसा लगता है कि इसमें सज़ा की डिग्री दी गई है। लूका 12 में दोनों ही बातें बताई गई हैं। लूका 12:47 और 48.

यीशु ने तत्परता के बारे में एक दृष्टांत बताया, जिसे हमने देखा कि अंतिम न्याय के अंशों का मुख्य उद्देश्य था, निश्चित रूप से सुसमाचारों में। लूका 12, उस दास का स्वामी, उस दिन आएगा जिसकी उसे उम्मीद नहीं है, और उस समय जब वह नहीं जानता, वह उसे टुकड़े-टुकड़े कर देगा और उसे विश्वासघातियों के साथ डाल देगा। और वह दास, वह दास स्वामी की इच्छा जानता था।

जो नौकर अपने मालिक की इच्छा जानता था, लेकिन उसके अनुसार तैयार नहीं हुआ या काम नहीं किया, उसे कड़ी मार पड़ेगी। लेकिन जो नहीं जानता था और उसने वही किया जो मार के लायक था, उसे हल्की मार पड़ेगी। क्या यह सज़ा की डिग्री नहीं है? मैं समझता हूँ कि यह एक दृष्टांत है, लेकिन दृष्टांत का मुद्दा सज़ा की डिग्री है।

कड़ी पिटाई, हल्की पिटाई। मत्ती 11:22 और 24. मत्ती 11:22.

न्याय के दिन सोदोम और अमोरा के लिए यह तुम्हारे, सोर और सीदोन के लिए अधिक सहनीय होगा। वह तुम्हारे, कफरनहूम के लिए सदोम की भूमि के लिए अधिक सहनीय होगा। यह निश्चित रूप से सजा की एक डिग्री है।

1 कुरिन्थियों 3:12 से 15 हमारा अंतिम अंश है। इस संदर्भ में, जो लोग निर्माण करते हैं, वे चर्च के नेता, एल्डर्स प्रतीत होते हैं। पॉल दो छवियों का उपयोग करता है, एक बागवानी छवि की।

वह पौधे लगाता है, और दूसरे लोग उसके चर्च, उसकी नींव पर निर्माण करते हैं। मुझे खेद है, पौधे लगाते हैं, और दूसरे लोग एक इमारत की छवि विकसित करते हैं। वह नींव रखता है, और दूसरे लोग उसकी नींव पर निर्माण करते हैं।

यहाँ संदर्भ में, यदि कोई निर्माण करता है, तो ऐसा लगता है कि यह चर्च के एल्डर्स हैं, विशेष रूप से व्याख्या के अनुसार; आवेदन प्रत्येक विश्वासी को संदर्भित करता है। यदि कोई नींव पर सोना, चांदी, कीमती पत्थर, लकड़ी, घास और भूसा बनाता है, तो हर एक प्रकट हो जाएगा, और दिन इसे प्रकट करेगा। जिस दिन वे इसे बनाते हैं, वह बड़े अक्षर DESV के साथ अंतिम दिन की बात करता है।

क्योंकि यह आग से प्रकट होगा, और आग यह परखेगी कि हर एक ने किस तरह का काम किया है। अगर किसी ने नींव पर जो काम किया है वह बच जाता है, तो उसे इनाम मिलेगा। ऐसा लगता है कि वफ़ादारी ही चल रही है।

ईमानदारी का प्रतिफल प्रतिफल के रूप में मिलता है। यदि किसी का काम जल जाए, तो उसे प्रतिफल नहीं मिलेगा, यद्यपि वह बच जाएगा, परन्तु केवल आग के द्वारा।

दोनों बच जाते हैं। वफ़ादार बुजुर्ग को इनाम मिलेगा। दूसरा अपना इनाम खो देगा।

तो, मुझे ऐसा लगता है। अंतिम निर्णय का सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य यह है कि प्रत्येक व्यक्ति के निर्णय में परमेश्वर की महिमा होगी। हालाँकि, इसका मतलब सुसमाचार प्रचार, सुसमाचार गवाही, चर्च की योजना और मिशन की तंत्रिका डोरी को काटना नहीं है, क्योंकि परमेश्वर पापियों से प्रेम करता है।

वह सुसमाचार को पूरी दुनिया में फैलाने का आदेश देता है। वह सुसमाचार का मुफ्त प्रस्ताव देता है। और फिर भी, परमेश्वर हारेगा नहीं।

हर इंसान के भाग्य में उसकी महिमा होगी। दूसरे, अंतिम न्याय नियति निर्धारित नहीं करता, बल्कि उन्हें निर्धारित करता है। तीसरे, परमेश्वर के न्याय के अनुरूप दण्ड की स्पष्ट डिग्री हैं।

जाहिर है, सज़ा के भी कई स्तर हैं। ईमानवालों की वफ़ादारी का इनाम। अंतिम न्याय की परिस्थितियाँ।

परमेश्वर न्यायी होगा। लगभग आधे अंशों में, यह पिता है। 1 पतरस 1:7, यदि तुम उसे पिता कहते हो जो हर एक के काम के अनुसार न्याय करता है, तो अपने निर्वासन के समय में भय के साथ आचरण करो, यह जानते हुए कि तुम मसीह द्वारा छुड़ाए गए हो।

पिता ही न्यायाधीश है। साथ ही, हम पीछे नहीं हटने वाले हैं। रोमियों 14.10. मेरे अनुमान में बेटा भी न्यायाधीश है।

आधे अंश। मत्ती 25, भेड़ और बकरियाँ। राजा यीशु अनन्त नियति निर्धारित करता है।

मत्ती 16:27. क्योंकि मनुष्य का पुत्र अपने स्वर्गदूतों के साथ अपने पिता की महिमा में आएगा। तब वह हर एक को उसके कामों के अनुसार बदला देगा। पुत्र बदला चुकाएगा।

बेटा ही न्यायकर्ता है। हमने यूहन्ना 5:28.29 में भी यही देखा। मनुष्य के बेटे की आवाज़ सुनकर, जो लोग कब्रों में हैं, वे पुनरुत्थान के लिए बाहर आएँगे, या तो जीवन के लिए या न्याय के लिए। इस संबंध में प्रेरितों के काम 10:42 महत्वपूर्ण है।

जहाँ पतरस कहता है, परमेश्वर ने हमें आज्ञा दी है, पतरस कहता है, लोगों को उपदेश देने और गवाही देने के लिए कि वह वही है जिसने परमेश्वर को जीवितों और मरे हुएों का न्यायी नियुक्त

किया है। परमेश्वर ने परमेश्वर को जीवितों का न्यायी नियुक्त किया है। उसके लिए, सभी भविष्यद्वक्ता गवाही देते हैं।

और जो कोई उस पर विश्वास करता है, उसे उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा मिलती है। वह पुत्र है। वह पुत्र है।

इसी तरह, 17:31. परमेश्वर ने एक दिन निश्चित किया है जिसमें वह अपने द्वारा नियुक्त एक व्यक्ति के द्वारा धार्मिकता से जगत का न्याय करेगा। और उसने उसे मरे हुआओं में से जिलाकर सब को इसकी गारंटी दी है। न्याय करनेवाला पिता है।

न्यायाधीश पुत्र है। क्या न्यायाधीश कभी स्पष्ट रूप से पवित्र आत्मा होता है? नहीं। और इसलिए मैं कहूँगा, इसलिए यदि मुझसे एक व्यवस्थित धर्मशास्त्री के रूप में यह प्रश्न पूछा जाए कि अंतिम दिन न्यायाधीश कौन है? मैं कहूँगा कि पवित्रशास्त्र लगभग आधे अंशों का श्रेय पिता को, आधे को पुत्र को, और कभी भी आत्मा को नहीं देता।

लेकिन चूँकि एक ईश्वर तीन व्यक्तियों से अविभाज्य है, इसलिए मैं कहूँगा कि पवित्र त्रिमूर्ति अंतिम दिन का न्यायाधीश है, विशेष रूप से पिता और पुत्र। मैं विशेष रूप से उल्लेख करूँगा कि शास्त्र कभी भी उस निर्णय को आत्मा को नहीं देता है, इस प्रकार मेरे धर्मशास्त्र में एक बाइबिल संबंधी, सख्त, व्याख्यात्मक आधार बना रहता है। लेकिन फिर मैं एक कदम आगे बढ़ाऊँगा और इसे पवित्र आत्मा सहित व्यवस्थितकरण के रूप में पहचानूँगा।

हमारे पास सबसे करीबी जॉन 16 है। वह दुनिया को पाप, धार्मिकता और न्याय के बारे में समझाएगा। यह अंतिम न्याय नहीं है।

हालाँकि, यह आत्मा के दोषी ठहराने वाले काम को दर्शाता है। किसका न्याय किया जाएगा? स्वर्गदूतों का और सभी मनुष्यों का। स्वर्गदूतों का।

एक उलझन भरी आयत। 1 कुरिन्थियों 6:2, और 3। कुरिन्थियों के लोग एक दूसरे को अदालत में ले जा रहे हैं, भाई भाई के खिलाफ़, और पौलुस परेशान है। क्या तुम्हारे बीच ऐसे बुजुर्ग नहीं हैं जो न्यायी के रूप में काम कर सकें? तुम अविश्वासियों के सामने जा रहे हो।

आपकी समस्या क्या है? क्या आप नहीं जानते कि हम स्वर्गदूतों का न्याय करेंगे? 1 कुरिन्थियों 6:2, और 3. इसका क्या मतलब है? इन बातों को सालों तक पढ़ाते हुए और इसके बारे में सोचते हुए, मैं जो सबसे अच्छा कर सकता हूँ, वह यह है कि मैं कहूँ, मुझे नहीं पता, लेकिन शायद हम परमेश्वर के न्याय के लिए आमीन कहेंगे। और फिर, देखिए, मैंने अपने पसंदीदा 1 कुरिन्थियों की टिप्पणी को सिआम्पा और रोस्नर द्वारा देखा, और उन्होंने यही कहा। मैं बहुत खुश था।

क्या तुम नहीं जानते कि हम स्वर्गदूतों का न्याय करेंगे? हम संसार का न्याय करेंगे। 2 पतरस 2:4 में परमेश्वर ने दुष्ट स्वर्गदूतों की निंदा की है। जब स्वर्गदूतों ने पाप किया तो उसने उन्हें नहीं छोड़ा, बल्कि उन्हें नरक में डाल दिया और उन्हें न्याय तक अंधकार की जंजीरों में जकड़ दिया।

यहूदा 6 भी कुछ ऐसा ही है। मत्ती 25:41 में राजा यीशु भेड़ और बकरी से कहते हैं, हे शापित लोगों, मेरे पास से चले जाओ और उस अनन्त आग में जाओ जो शैतान और उसके स्वर्गदूतों के लिए तैयार की गई है। शैतान भी एक गिरा हुआ स्वर्गदूत है।

वह और उसके राक्षस, यह मानते हुए कि राक्षस पतित स्वर्गदूतों के समान हैं, नरक में भेजे जाएंगे। प्रकाशितवाक्य 20:10 कहता है कि शैतान जिसने उन्हें धोखा दिया था उसे आग की झील में डाल दिया गया जहाँ जानवर और झूठा भविष्यद्वक्ता हैं, और वे, इसके बहुवचन में, हमेशा-हमेशा के लिए दिन-रात तड़पते रहेंगे। स्वर्गदूतों का न्याय किया जाएगा।

सभी मनुष्यों का न्याय किया जाएगा। रोमियों 2:5 और 6, हमने इसे कई बार पढ़ा है: कपटी लोग अपने लिए न्याय इकट्ठा कर रहे हैं। श्लोक 6, परमेश्वर प्रत्येक को उसके कामों के अनुसार प्रतिफल देगा।

जो लोग धीरज और भलाई के साथ महिमा, सम्मान और अमरता की खोज करते हैं, उन्हें वह अनंत जीवन देगा। यह कर्मों से मुक्ति नहीं है; यह कर्मों से न्याय है। लेकिन जो स्वार्थी हैं और सत्य का पालन नहीं करते बल्कि अधर्म का पालन करते हैं, उनके लिए क्रोध और रोष होगा।

फिर परमेश्वर इसे उलट देता है। ए, बी, और फिर बी प्राइम, ए प्राइम। हर उस इंसान के लिए क्लेश और संकट होगा जो बुराई करता है, सबसे पहले यहूदी, फिर यूनानी भी, लेकिन हर उस इंसान के लिए महिमा और सम्मान और शांति होगी जो अच्छा करता है, सबसे पहले यहूदी, फिर यूनानी भी।

क्योंकि परमेश्वर किसी के साथ पक्षपात नहीं करता। मैं एक और व्याख्या को स्वीकार करता हूँ, डौग मूस की, जो कहती है कि यह काल्पनिक है, और फिर भी थॉमस श्राइनर, सीईबी क्रैनफील्ड, और अधिकांश टिप्पणीकार अंततः कहेंगे, नहीं, यह औचित्य के बारे में नहीं, बल्कि पवित्रीकरण के बारे में बात कर रहा है। और जब परमेश्वर किसी को बचाता है, तो यह केवल उसे अंतिम दिन जो सत्य होगा उससे बरी नहीं करता है।

औचित्य बहुत ज़रूरी है, लेकिन वह उन्हें अपनी आत्मा देता है, और वह उनमें अच्छे काम, प्रेम, इत्यादि उत्पन्न करता है, जो निरंतर पवित्रीकरण के द्वारा उनके औचित्य की वास्तविकता को प्रदर्शित करता है। किसी भी मामले में, सभी मनुष्यों का न्याय किया जाएगा।

रोमियों 3 और आयत 6 में पॉल पर बहुत ज़्यादा अनुग्रह का प्रचार करने का आरोप लगाया गया है। यह लाइसेंस की ओर ले जाएगा। पॉल बहुत गुस्से में है।

किसी भी तरह से परमेश्वर क्रोध लाने के लिए अधर्मी नहीं है। यह पॉल के लिए अकल्पनीय है। किसी भी तरह से नहीं, क्योंकि फिर परमेश्वर दुनिया का न्याय कैसे कर सकता है? यह तो तय है।

यह उनके विचार की एक पूर्वधारणा है; वह कह सकते हैं, बेशक, भगवान दुनिया का न्याय करने जा रहे हैं, और यह दर्शाता है कि वह पाप को न्यायोचित रूप से दंडित करेंगे। क्रोध भड़काने में वह अन्यायी नहीं है। क्योंकि हम सभी जानते हैं कि वह दुनिया का न्याय करेंगे।

यह प्रकाशितवाक्य 20:12 और 13 में वर्णित पापियों की दुनिया है, जहाँ हम वापस लौटेंगे, सभी मनुष्य, बड़े और छोटे, महान श्वेत सिंहासन पर परमेश्वर के सामने हैं। न्यायाधीश कौन है? कभी पिता, कभी पुत्र। व्यवस्थित सूत्रीकरण, मैं कहूँगा त्रिदेव।

किसका न्याय किया जाता है? दुष्ट स्वर्गदूतों का, दुष्ट मनुष्यों का। न्याय का आधार क्या है? शार्टहैंड का उपयोग करें जैसा कि शास्त्र आमतौर पर करते हैं, यह कर्म है, यह काम है, यह क्रिया है, जो हृदय में क्या है, यह प्रकट करता है। लंबे हाथ, विचार, शब्द, कर्म।

1 कुरिन्थियों 4:5. मैं व्याख्यात्मक धर्मशास्त्र के प्रति प्रतिबद्ध हूँ, चाहे वह मुझे कहीं भी ले जाए। अगर यह मेरे इस या उस को संशोधित करता है, तो ऐसा ही हो। अगर यह अन्य चीजों को संशोधित करता है, तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है।

दिन के अंत में, मैं धर्मशास्त्र के बजाय बाइबिल पर आधारित होना पसंद करूँगा। आपका मतलब है कि आप अपने सिस्टम में ढीले सिरे छोड़ देंगे? हाँ। आप विरोधाभास, स्पष्ट विरोधाभास और विरोधाभास छोड़ देंगे।

मैं वास्तविक विरोधाभासों से सहमत नहीं हूँ, लेकिन हाँ, मैं धर्मशास्त्रीय होने के बजाय बाइबिलीय होना पसंद करूँगा। क्या मैं वास्तव में बाइबिल को अपने सिस्टम में फिट करना चाहता हूँ? नहीं। और मैं स्वीकार करता हूँ कि बाइबिल एक व्यवस्थित धर्मशास्त्र पुस्तक नहीं है; यह एक कहानी की किताब है, यह ईश्वर की कहानी है, लेकिन वह रास्ते में बहुत सारे धर्मशास्त्र सिखाता है, और हम इसमें से अधिकांश को एक साथ जोड़ सकते हैं।

एक और बात यह है कि, जैसा कि केल्विन कहते हैं, जब परमेश्वर अपना पवित्र मुँह खोलता है, यानी जब वह शास्त्र में बोलता है, तो हम उस पर विश्वास करते हैं, हम उसे ग्रहण करते हैं, हम उसका पालन करते हैं, भले ही हमें वह पसंद हो या न हो। मैं आपको कुछ ऐसे सिद्धांत बता सकता हूँ जो मुझे पसंद नहीं हैं। मूल पाप, दोहरा पूर्वनिर्धारण, और अनन्त दण्ड शीर्ष तीन हैं।

क्या मैं उन पर विश्वास करता हूँ? हाँ, सही समझा क्योंकि मुझे कोई संदेह नहीं है कि शास्त्र उन्हें सिखाता है। किसी भी मामले में, 1 कुरिन्थियों 4:5 में, पौलुस अपनी सेवकाई के बारे में बात करते हुए कहता है, प्रभु के आने से पहले समय से पहले निर्णय न सुनाओ, जो अब अंधकार में छिपी हुई बातों को प्रकाश में लाएगा और हृदय के उद्देश्यों को प्रकट करेगा। तब प्रत्येक व्यक्ति परमेश्वर से अपनी प्रशंसा प्राप्त करेगा।

दिल के इरादे और उद्देश्य उजागर हो जाएँगे। क्या आपके साथ भी ऐसा कभी हुआ है? हाल ही में मेरे साथ भी ऐसा हुआ। मेरे मन में किसी के बारे में कुछ बुरे विचार हैं। मुझे बहुत खुशी है कि मैंने कुछ नहीं कहा, और फिर मुझे स्थिति का पता चला।

मैं पूरी तरह गलत था। वे न तो धोखेबाज़ थे और न ही झूठ बोल रहे थे। मुझे स्थिति की केवल आंशिक समझ थी।

यह एक अलग स्थिति थी। परमेश्वर को स्थिति की आंशिक समझ नहीं है। और अंतिम दिन हृदय के उद्देश्यों, एनआईवी, उद्देश्यों, ईएसवी को प्रकट करेगा।

क्या हमें इस बारे में चिंता करते हुए देर रात तक जागना चाहिए? नहीं। यीशु हमारे सभी पापों के लिए मरा। हमें अपने इरादों को समझते हुए ईमानदार होना चाहिए।

क्या हम उन्हें पूरी तरह समझते हैं? नहीं। क्या यह मेरा काम है कि मैं इस पर विचार करूं, अंदर जाऊं और सब कुछ साफ़ करने की कोशिश करूं? नहीं, नहीं। यह गलत है।

नहीं, आप आगे बढ़ें, आप प्रभु के लिए जियें। जैसे-जैसे चीजें सामने आती हैं, आप उन्हें स्वीकार करते हैं। मैं ऐसे विश्वासियों को जानता हूँ, जिनके जीवन में सालों तक ऐसी चीजें रहीं, जो वहाँ नहीं होनी चाहिए थीं।

उन्हें पता भी नहीं था, और कुछ हुआ, और फिर उन्होंने देखा, ओह माय वर्ड, मैं उस व्यक्ति के प्रति 20 सालों से अपने दिल में कड़वाहट पाल रहा था। यह वहाँ था। उन्हें कभी पता ही नहीं चला।

परमेश्वर ने उन्हें यह बात बताई। उन्होंने तुरंत पश्चाताप किया। क्या आपको वाकई लगता है कि आप अपने सभी पापों को जानते हैं? लेकिन शुक्र है कि परमेश्वर जानता है, और यीशु उनके लिए मरा।

तुम हंसते हो, और तुम रोते हो। हर लापरवाह शब्द का न्याय किया जाएगा। मत्ती 12, 36।

यीशु एक कठोर उपदेशक हैं। वाह। पेड़ अपने फल से जाना जाता है।

एक अच्छा पेड़ अच्छे फलों के लिए जाना जाता है। बुरे पेड़ बुरे फलों से जाने जाते हैं। तुम सांपों के बच्चे हो।

यार, बेशक, उसके पास नॉर्मन विसेंट पील जैसा गुण नहीं था कि वह हर किसी से दयालुता से बात करे। नहीं, वह दयालु है, और वह उन धार्मिक नेताओं पर बरसता है जिन्हें इसकी ज़रूरत है। मैं प्रेरितों के काम अध्याय 6 पर चकित हूँ, जहाँ बहुत से लोग, यहाँ तक कि पुजारियों में से भी, उस पर विश्वास करते थे।

क्या वे ऐसा करते अगर वह उन सभी के इर्द-गिर्द घूमता? नहीं, नहीं। उसने उन पर हमला किया, और यह बात उनके कुछ दिमागों में बैठ गई। उन्होंने सवाल करना शुरू कर दिया, और इसने संदेह पैदा किया, और बाद में, भगवान की कृपा से, उन्होंने विश्वास किया। जब आप बुरे हैं तो आप अच्छा कैसे बोल सकते हैं? क्योंकि दिल की भरपूरी से मुंह बोलता है।

अच्छा इंसान अपने अच्छे भण्डार से अच्छाई निकालता है। बुरा इंसान अपने बुरे भण्डार से बुराई निकालता है। इसलिए, मैं तुमसे कहता हूँ, न्याय के दिन, जो समय की तरह है, लोग अपने हर

लापरवाह शब्द का हिसाब देंगे, क्योंकि तुम्हारे शब्दों से, तुम न्यायसंगत ठहरोगे, और तुम्हारे शब्दों से, तुम दोषी ठहरोगे।

न्याय इस बात पर आधारित है कि हम क्या करते हैं। नहीं, यह अनुग्रह और विश्वास पर आधारित है। हम जो करते हैं वह अनुग्रह और विश्वास से निकलता है।

अगर हमने विश्वास किया है, अगर हमने नहीं किया है, तो हम बुरे पेड़ हैं जो बुरी चीजें, बुरे शब्द, बुरे विचार, बुरे काम पैदा करते हैं, और हम उचित रूप से दोषी हैं। लोगों को यीशु पर विश्वास न करने के लिए दोषी नहीं ठहराया जाता है। मुझे गलत मत समझिए।

एकमात्र बचाव यीशु पर विश्वास करना है, लेकिन परमेश्वर के लिए यह कितना उचित होगा? आपने कभी नहीं सुना, इसलिए आप दोषी हैं। नहीं, वे दोषी हैं, और यदि उन्होंने कभी नहीं सुना, तो वे दोषी हैं, मेरी समझ से, उनके पापी विचारों, शब्दों और कर्मों के लिए। इसलिए न्याय मार्ग पर कोई अपील नहीं है।

हे प्रभु, आप समझ नहीं रहे हैं। मैंने ज़्यादा अच्छा किया। नहीं, वे बस चुप हैं।

उन्हें बस दोषी ठहराया जाता है। लेकिन सबसे बढ़कर, बार-बार, न्याय कर्मों के आधार पर होता है। हमने इसे मत्ती 5:18 और 19 में देखा।

मैं फिर से नहीं मुड़ने वाला हूँ। मनुष्य के पुत्र की आवाज़ पर, कब्रें खुल जाएँगी, और लोग बाहर निकल आएंगे। जिन्होंने बुरे काम किए हैं, उन्हें न्याय के पुनरुत्थान के लिए।

बेटा, यह बहुत सही है। यह अच्छा है। यह सही है।

जिन्होंने अच्छे कर्म किए हैं, उन्हें जीवन का पुनरुत्थान मिला है, क्या वे कर्मों द्वारा उद्धार पाते हैं? नहीं, यह कर्मों द्वारा न्याय है। अनुमान लगाइए कि जिन्होंने अच्छे कर्म किए हैं, वे कौन हैं? जो लोग यीशु में विश्वास करते हैं, वे ईश्वर की मुफ्त कृपा से बचाए जाते हैं। और जैसा कि जॉन मुरे ने हमें याद दिलाया, वैसे वे रोमियों 2 की मेरी व्याख्या से सहमत थे।

वह कहता है, देखो। वह नहीं कहता कि देखो। उसकी रोमन टिप्पणी, जॉन मुरे, पुरानी NICNT वॉल्यूम।

उद्धार केवल औचित्य नहीं है। यह आजीवन पवित्रता भी है। यह औचित्य के साथ-साथ परमेश्वर का उद्धार भी है।

पवित्रीकरण का अर्थ है कि जब हम यीशु पर विश्वास करते हैं और मसीह की धार्मिकता हमारे आध्यात्मिक बैंक खातों में लागू होती है, तो परमेश्वर हमें हमेशा के लिए बरी कर देता है। उद्धार भी उसका कार्य है। और यह अंतिम निर्णय में दिखाई दे सकता है।

विश्वास प्रकट हो सकता है। जेम्स 2, मैं इसे फिर से कहूँगा। तुम मुझे अपना विश्वास बिना कामों के दिखाओ।

यह असंभव है। और मैं तुम्हें अपने कामों के द्वारा अपना विश्वास दिखाऊँगा। प्रकाशितवाक्य 20.

बहुत ही रोचक। कुछ अंशों में, पूर्वनियति और न्याय के अंश हैं। कुछ न्याय के अंशों में, क्या पूर्वनियति विषय है?

लेकिन यह बात बड़ी है। ग्रेगरी बील अपनी महान रहस्योद्घाटन टिप्पणी में सही हैं। उदारवादियों सहित सभी लोगों द्वारा उस टिप्पणी की समीक्षा कहती है कि यह सर्वनाश की एक उल्लेखनीय व्याख्या है।

लेकिन महान श्वेत सिंहासन के न्याय में कर्मों पर जोर दिया गया है। फिर मैंने सिंहासन देखे। यह बात नहीं है।

फिर मैंने एक बड़ा सफेद सिंहासन देखा। बस यही था। 20:11.

और जो उस पर बैठा था, पृथ्वी और आकाश उससे दूर भाग गए, जैसा कि हमने पहले कहा था। फिर मैंने देखा कि बड़े और छोटे मरे हुए सिंहासन के सामने खड़े थे। और पुस्तकें खोली गईं।

यह कर्मों की पुस्तकें हैं। लेकिन एक और पुस्तक खोली गई, जो जीवन की पुस्तक है। और मरे हुएओं का न्याय उनके कामों के अनुसार किया गया जो पुस्तकों में लिखा था।

ये उनके कर्मों के अनुसार पुस्तकें हैं। ये उनके कर्म हैं।

समुद्र ने अपने अंदर मौजूद मृतकों को छोड़ दिया। दूसरे शब्दों में, पुनरुत्थान हर किसी का है, हर जगह, और इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि वे कैसे या कहाँ मरते हैं। अधोलोक में मृत्यु, कब्र में मृत्यु, उन मृतकों को छोड़ देती है जो उनमें थे।

और उनमें से हर एक का न्याय किया गया, अनुमान लगाइए, उनके कामों के अनुसार। अगर किसी का नाम जीवन की पुस्तक में नहीं लिखा था, तो उसे आग की झील में फेंक दिया गया। तो, इसके बारे में बात करने के दो तरीके हैं।

मानवीय जिम्मेदारी के संदर्भ में, हमें काम के अनुसार आंका जाता है। या तो यह प्रकट करना कि हम यीशु में विश्वास के माध्यम से अनुग्रह से बचाए गए थे या यह कि हम नहीं बचाए गए थे। जीवन की यह पुस्तक क्या है? बील सही थे, ग्रेगरी बील, रहस्योद्घाटन पर टिप्पणी।

यह परमेश्वर के लोगों का स्वर्गीय रजिस्टर है। यह नए यरूशलेम की जनगणना है। यह चुने हुए लोगों की सूची है।

यह पूर्वनियति का तनाव है। कुछ अन्य अंशों में, हमें इसके संकेत मिलते हैं। मत्ती 7, मैंने तुम्हें कभी नहीं जाना, हे दुष्टों, मेरे पास से चले जाओ।

निहितार्थ? अगर वह उन्हें बचाने के लिए जानता, तो वे बच जाते। वह उन्हें बचाने के लिए नहीं जानता था। वह हर किसी को जानता है।

वह उनके बारे में सब कुछ जानता है। वह अपनी सर्वज्ञता के बारे में बात नहीं कर रहा है। वह इससे इनकार नहीं कर रहा है।

नहीं, वह यूहन्ना 10 के बारे में बात कर रहा है। मैं अपनी भेड़ों को जानता हूँ, और वे मुझे जानती हैं। वह उद्धार के ज्ञान के बारे में बात कर रहा है।

लेकिन यह उच्चारण नहीं है। उच्चारण कर्मों के आधार पर निर्णय है। पूरी तस्वीर, विचार, शब्द और कर्म।

इस प्रकार, अंतिम निर्णय के सिद्धांत को संक्षेप में प्रस्तुत किया जा सकता है। यह युग के अंत में होने जा रहा है जब यीशु वापस लौटेंगे और लोगों को उठाया जाएगा, उन्हें न्यायाधीश के सामने पेश होने के लिए उठाया जाएगा, नए स्वर्ग और नई पृथ्वी से पहले। और, मुझे कहना चाहिए, सहस्राब्दी से पहले, यदि प्रीमिल्स सही हैं, और फिर नए स्वर्ग और नई पृथ्वी से पहले।

इंसान के भाग्य में ईश्वर की महिमा होगी।

दूसरा उद्देश्य, और बहुत महत्वपूर्ण, नियति निर्धारित करना नहीं बल्कि उन्हें निर्धारित करना है। तीसरा, दंड की डिग्री होगी। ऐसा लगता है कि पुरस्कार की डिग्री भी होगी, और यह अनुग्रह पर आक्षेप नहीं करता है।

यह ईश्वर की महिमा के लिए मानवीय निष्ठा के साथ मिश्रित अनुग्रह का परिणाम है। इसके अलावा, मान लें कि दृष्टांत में शहर वास्तविक हैं। ठीक है? मेरे ईश्वरीय मित्र, डेविड कैलहौन, मान लें कि उन्हें दस शहर मिलते हैं, और मान लें कि पीटरसन को एक मिलता है।

क्या पता? यह सब यीशु का है। वह मेरा है। मैं उसका हूँ।

इसलिए, अगर पीटरसनविले में एक शहर है, और कैलहौनविले में दस हैं, तो मैं जब चाहूँ कैलहौनविले जा सकता हूँ। तो, हे भगवान, मैं आपको बताता हूँ कि, पूरे सौदे के हिस्से के रूप में उठाया जाना, महिमामंडित होना, पवित्र होना और नई धरती पर होना, बस यही मेरी किताब में है। दूसरा केक पर आइसिंग है, और अगर भगवान अपने कुछ सेवकों को और अधिक पुरस्कृत करना चाहते हैं, तो उनके नाम की प्रशंसा करें।

यह अद्भुत है। मुझे यह पसंद है। अंतिम निर्णय की परिस्थितियाँ।

ईश्वर ही न्यायकर्ता है। स्पष्ट रूप से, आधे अंश में पिता है, आधे अंश में पुत्र है। हे भगवान, बेटा ही ईश्वर है, मेरे दोस्तों।

अंतिम न्याय के समय कोई भी साधारण मनुष्य या देवदूत परमेश्वर की जगह नहीं ले सकता। किसका न्याय किया जाता है? दुष्ट स्वर्गदूतों का न्याय किया जाता है। इतना ही नहीं, बल्कि दुष्ट मनुष्यों का भी न्याय किया जाता है।

क्या सभी मनुष्य न्याय के सामने नहीं आएंगे? हाँ। इस संदर्भ में हमारा मतलब है कि नकारात्मक रूप से न्याय किया जाएगा। हमें मनुष्यों और स्वर्गदूतों के सामने धर्मी घोषित किया जाएगा।

अब हम जो सुसमाचार सुनते हैं, वह अंतिम दिन के फैसले का सटीक, पहले से ही फैसला है, हमारे औचित्य का अभी तक फैसला नहीं हुआ है। तकनीकी रूप से, औचित्य, जैसा कि रोमियों 5:19 में कहा गया है, और मैथ्यू के अंश में जहाँ यीशु ने कहा, तुम्हारे शब्दों से तुम बच जाओगे। मैथ्यू 12:35, ठीक वहाँ, 35, 36, 37।

अपने शब्दों से, आप न्यायसंगत ठहराए जाएँगे; अपने शब्दों से, आप संतुष्ट होंगे। औचित्य सबसे तकनीकी रूप से और उचित रूप से, मोक्ष के हर दूसरे पहलू की तरह, अभी तक नहीं है। ओह, यह वास्तव में है। हम इसे अब समझते हैं, वास्तव में, वास्तव में, लेकिन हम इसे आंशिक रूप से समझते हैं।

आपने अभी तक कुछ भी नहीं देखा है। हम अंतिम दिन न्यायसंगत ठहराए जाएँगे। निस्संदेह, वे सभी जो इस जीवन में यीशु द्वारा वास्तव में न्यायसंगत ठहराए गए थे, उन्हें उस दिन परमेश्वर और स्वर्गदूतों के सामने धर्मी घोषित किया जाएगा, जो अभी तक उद्धार का पहलू नहीं है।

हालाँकि कुछ लोगों के लिए इसे समन्वयित करना कठिन है, जो कि व्यवस्थित धर्मशास्त्र का कार्य है, अन्य बाइबिल डेटा के साथ, निर्णय विश्वास पर आधारित नहीं होगा, बल्कि प्रकट विश्वास पर आधारित होगा। आप केवल न्याय करने के लिए विश्वास और ईश्वर का न्याय नहीं कर सकते; हमें ईमानदारी से न्याय करें। विश्वास, जैसा कि यह दिखाया गया था, मुझे अपने कर्मों से अपना विश्वास दिखाओ।

वह ठीक यही करता है। और बुरे पेड़ों का बुरा फल निंदा की ओर ले जाता है। अच्छे का अच्छा फल, मैं एक अच्छा पेड़ कैसे बन गया? विश्वास के द्वारा अनुग्रह से।

और वैसे, वह आजीवन पवित्रीकरण, जिसमें वे अच्छे काम दिखाई देते हैं, वह काम है, है न मेरा? हाँ, यह है, हम काम करते हैं। हम औचित्य में काम नहीं करते। हम पवित्रीकरण में परमेश्वर के साथ सहयोग करते हैं।

आह, तो यह सब हमारी महिमा के लिए है, है न? नहीं। हे भगवान। यह त्रिदेव की महिमा के लिए है।

त्रिदेव अच्छे फल पैदा करते हैं। मुझे सबूत दो। मुझे खुशी होगी।

यह परमेश्वर है, फिलिप्पियों 2, गोल छंद, बेहतर होगा कि मैं गोल छंद कहना बंद कर दूँ। यह परमेश्वर, पिता, पुत्र, पवित्र आत्मा, सृष्टिकर्ता है, जो अपनी अच्छी इच्छा के लिए हममें इच्छा और कार्य करने के लिए कार्य करता है। फिलिप्पियों 2:12 और 13 विशेष रूप से।

पुत्र फल उत्पन्न करता है। हम उसके बिना कुछ नहीं कर सकते, यूहन्ना 15. अच्छे काम जो न्याय में प्रकट होते हैं जिसके द्वारा हम बरी हो जाते हैं वे फल हैं जो हम उत्पन्न करते हैं, जो प्रभु हमारे सहयोग से और हमारे द्वारा उत्पन्न करते हैं, हमारे द्वारा उस दाखलता से जुड़ने के द्वारा जो यीशु है।

क्या मैं यह कह रहा हूँ कि पवित्रीकरण के अच्छे कार्य पिता और पुत्र के कार्य हैं? हाँ, और आत्मा के भी, गलातियों 5. आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, शांति और धैर्य है। त्रिएकत्व हमारे अन्दर ये चीज़ें उत्पन्न करता है। इसलिए, इसका कोई मतलब नहीं है कि हम उन्हें करते हैं।

ओह, हम निश्चित रूप से ऐसा करते हैं। हम परमेश्वर की कृपा से स्वतंत्र रूप से बचाए गए हैं। हमारी बाध्यता मुक्त हो गई है, और अब हम परमेश्वर के साथ सहयोग करते हैं ताकि उसकी महिमा हो।

पिता, पुत्र और आत्मा हम में काम करते हैं, और हम, कानूनी फर्म में जूनियर पार्टनर के रूप में, खिलाड़ी के रूप में, परमेश्वर के प्रबंधक के रूप में, हम आज्ञा का पालन करते हैं। हम उसकी शक्ति पर भरोसा करते हैं। हम उसकी महिमा की प्रशंसा करते हैं।

हम उसके साथ चलते हैं, और वह भी उसकी कृपा से। हम अनन्त अवस्था, अनन्त दण्ड की ओर बढ़ते हैं। नरक, अभी तक नहीं के अर्थ में, एक मध्यवर्ती नरक है, जैसा कि हमने देखा।

लूका 16, अमीर आदमी वहाँ जाता है। 2 पतरस 1, 2 पतरस 2:9, लेकिन यह वास्तव में वह नरक नहीं है जिसके बारे में हम बात कर रहे हैं। नरक अंतिम अवस्था है।

यह दूसरे आगमन के बाद आता है। भेड़ और बकरियाँ, मत्ती 25:31। मनुष्य का पुत्र अपनी महिमा में आता है, राष्ट्रों को विभाजित करता है।

मुझसे दूर हो जाओ, तुम अनन्त आग में अभिशप्त हो, मत्ती 25:31। यह पुनरुत्थान के बाद आता है। मनुष्य के पुत्र की आवाज़ पर, वे अपनी कब्रों से बाहर निकलेंगे, कब्रों से बाहर, कुछ न्याय के पुनरुत्थान के लिए।

अंतिम न्याय के बाद अनन्त दण्ड मिलता है, प्रकाशितवाक्य 20:11-15. मैंने महान श्वेत सिंहासन देखा। हर कोई उसके सामने खड़ा है, और उनमें से कुछ को आग की झील में डाल दिया जाता है।

इसलिए, अनंत दंड नरक है, जो अंतिम अवस्था है, न कि मध्यवर्ती अवस्था। दूसरा, नरक का स्वामी। मेरे लिए यह मानना कठिन है कि इस बिंदु पर भ्रम रहा है, लेकिन चर्च के इतिहास में ऐसा रहा है।

नरक का स्वामी, बाकी सब का स्वामी, सर्वशक्तिमान भगवान है। हे भगवान। शैतान नहीं।

शैतान को नरक में सबसे बुरी सज़ा मिलती है। मत्ती 25:41. मेरे पास से चले जाओ, और तुम अनन्त आग में शापित हो।

शैतान और उसके स्वर्गदूतों के लिए तैयार हो जाओ, प्रकाशितवाक्य 20:10. शैतान जिसने उन्हें धोखा दिया था, उसे आग की झील में डाल दिया गया, जहाँ वह, झूठा भविष्यद्वक्ता और जानवर, हमेशा-हमेशा के लिए दिन-रात तड़पता रहेगा। शैतान किसी भी चीज़ का स्वामी नहीं है।

खैर, वह अपने बुरे राज्य का स्वामी है। यह कैसे है? वह निश्चित रूप से स्वर्ग या नरक का स्वामी नहीं है। भगवान स्वर्ग, पृथ्वी और नरक का स्वामी है।

अगर कोई और बात है जो मैं भूल गया हूँ, तो वह उसका भी प्रभु है। वह परमेश्वर है। लूका 12:5. मैं तुमसे कहता हूँ, आयत 4, लूका 12, उनसे मत डरो जो शरीर को मारते हैं और उसके बाद और कुछ नहीं कर सकते।

लेकिन मैं तुम्हें बता दूँ कि तुम्हें किससे डरना चाहिए। उससे डरो जो मारने के बाद नरक में डालने का अधिकार रखता है। क्या वह शैतान है? नहीं, वह परमेश्वर है, बेशक।

बहुत से लोगों के लिए यह बहुत चौंकाने वाली बात है कि भगवान नरक में मौजूद हैं। हमें इस बात से हैरान नहीं होना चाहिए। भगवान हर जगह मौजूद हैं।

ओह, चलो, आपको नरक में मौजूद भगवान का यह मामला कहां से मिला? रहस्योद्घाटन 14, वास्तव में, यह मेमना है, सर्वनाश में मसीह की सबसे प्रचलित तस्वीर। रहस्योद्घाटन मेमना है। वास्तव में, हर बार लेकिन एक बार, शायद 14 उपयोग हैं, मेरे पास सटीक गिनती नहीं है।

एक बार जब इसका प्रयोग मेटा-उपमा में किया जाता है, तो समुद्र से निकलने वाले जानवर के सींग मेमने जैसे होते हैं। हर बार, यह ईश्वर का पुत्र होता है। बेशक, उसके बलिदान की बात करते हुए, उसके उद्धारकर्ता होने की बात करते हुए।

और प्रकाशितवाक्य 14 शक्तिशाली है। प्रकाशितवाक्य 14, अंतिम दिन में मूर्तिपूजक, 14:10, परमेश्वर के क्रोध की मदिरा पीएंगे, जो उसके क्रोध के प्याले में पूरी ताकत से डाली गई है। और उसे पवित्र स्वर्गदूतों और मेम्ने की उपस्थिति में आग और गंधक से पीड़ा दी जाएगी।

और उनकी यातना का धुआँ हमेशा-हमेशा के लिए ऊपर उठता रहेगा। दिन-रात कोई आराम नहीं है। पवित्र स्वर्गदूत नरक में होंगे, पीड़ा नहीं झेलेंगे बल्कि परमेश्वर की महिमा के लिए उसकी महिमा करेंगे।

और पवित्रता, पवित्रता, न्याय, क्रोध। जोनाथन एडवर्ड्स सही हैं। ईश्वर हर जगह मौजूद है।

ओह, वह हर जगह एक ही तरह से मौजूद नहीं है। वह स्वर्ग या नई पृथ्वी में अनुग्रह, संगति, प्रेम, दया, संगति और महिमा में मौजूद है। वह महिमा में नरक में मौजूद है।

वह स्वर्ग या नई पृथ्वी में महिमा, पवित्रता, धार्मिकता और क्रोध में मौजूद है। परमेश्वर नरक में मौजूद है। हमारे अगले व्याख्यान में, हम नरक का वर्णन करेंगे और फिर आगे बढ़ेंगे, हल्लिलूय्याह, नए स्वर्ग और नई पृथ्वी का वर्णन करने के लिए।

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन द्वारा चर्च के सिद्धांतों और अंतिम बातों पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 19 है, अंतिम निर्णय, उद्देश्य, परिस्थितियाँ, शाश्वत स्थिति, शाश्वत दण्ड।